INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
(Peer Review Journal as per UGC 2025 Standard Guidelines)
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 12, Issue: 4 | October – December 2025

सोशल मीडिया प्लेटफार्मों की जवाबदेही: फर्जी खबरों और गलत सूचना का नियंत्रण

[1] विक्की कुमार, [2]डॉ. मनोज कुमार
[1]शोधार्थी, [2]पर्यवेक्षक
[1–2]विभाग :राजनीति विज्ञान, स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय ,मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत

सार
डिजिटल युग में, सोशल मीडिया प्लेटफार्मों का प्रभाव बहुत बढ़ गया है, जिससे गलत सूचना और फर्जी खबरों का प्रसार एक गंभीर समस्या बन गया है। सोशल मीडिया की वायरल प्रकृति और एल्गोरिदम की संरचना इस प्रक्रिया को तेजी से फैलने में मदद करती है। गलत सूचना से राजनीति में विश्वास में कमी आ सकती है, राजनीतिक विमर्श विकृत हो सकता है और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। यह शोध पत्र सोशल मीडिया प्लेटफार्मों की जिम्मेदारी पर चर्चा करता है, खासकर फर्जी खबरों और गलत सूचना के नियंत्रण के संदर्भ में। इसके अंतर्गत तथ्य–जांच, मीडिया साक्षरता अभियानों, प्लेटफार्मों की जवाबदेही और प्रौद्योगिकी के योगदान को परखा गया है। साथ ही, यह राजनीतिक ध्रुवीकरण, इको चौंबर और फिल्टर बबल्स पर भी विचार करता है, जो सोशल मीडिया की विभाजनकारी प्रकृति को और बढ़ाते हैं।

मुख्य शब्दः सोशल मीडिया, गलत सूचना, फर्जी खबरें, एल्गोरिदम, राजनीतिक ध्रुवीकरण, इको चौंबर, फिल्टर बबल्स।

परिचय

सोशल मीडिया प्लेटफार्मों ने राजनीतिक संचार और जनमत निर्माण के तरीके को बदल दिया है। हालांकि यह जनता को जानकारी प्राप्त करने के नए अवसर प्रदान करता है, वहीं इसके साथ–साथ गलत सूचना और फर्जी खबरों का प्रसार भी बढ़ा है। सोशल मीडिया के एल्गोरिदम और वायरल सामग्री के कारण गलत जानकारी तेजी से फैलती है, जो राजनीतिक विमर्श को विकृत कर सकती है। यह गलत सूचना लोकतांत्रिक संस्थाओं पर भरोसा घटा सकती है, राजनीतिक ध्रुवीकरण को बढ़ा सकती है और चुनावी परिणामों को प्रभावित कर सकती है। इस अध्ययन का उद्देश्य सोशल मीडिया प्लेटफार्मों की जवाबदेही पर विचार करना है और यह समझना है कि सोशल मीडिया पर फैलने वाली गलत सूचना और फर्जी खबरों से निपटने के लिए क्या रणनीतियाँ अपनाई जा सकती हैं।

गलत सूचना और फर्जी समाचार

डिजिटल युग में, विशेषकर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों के बढ़ते चलन के साथ, गलत सूचना और फर्जी खबरें एक गंभीर समस्या बन गई हैं। गलत या भ्रामक सूचनाओं के तेजी से फैलने से राजनीतिक संस्थाओं में जनता का विश्वास कम हो सकता है, राजनीतिक चर्चा विकृत हो सकती है और अंततः लोकतांत्रिक प्रक्रियाएं प्रभावित हो सकती हैं। यह खंड बताता है कि गलत सूचना कैसे फैलती है, राजनीति पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है और डिजिटल युग में फर्जी खबरों से निपटने की क्या रणनीतियां हैं।

गलत सूचना का प्रसार और राजनीति पर इसका प्रभाव

1. गलत सूचना के प्रसार की कार्यप्रणाली

सोशल मीडिया की वायरल प्रकृतिः सोशल मीडिया पर गलत जानकारी तेजी से फैलती है क्योंकि ये प्लेटफॉर्म

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
(Peer Review Journal as per UGC 2025 Standard Guidelines)
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 12, Issue: 4 | October – December 2025

वायरल प्रकृति के होते हैं। जब उपयोगकर्ता सनसनीखेज या भावनात्मक रूप से आवेशित सामग्री से जुड़ते हैं, तो वे इसे अपने नेटवर्क में साझा करने की अधिक संभावना रखते हैं। जैसे–जैसे यह सामग्री प्रसारित होती है, यह अधिक से अधिक दर्शकों तक पहुंचती है, अक्सर तथ्य–जांच या सत्यापन होने से पहले ही (ऑलकॉट और जेंट्जकोव, 2017)।

इको चौंबर्स और फिल्टर बबल्सः सोशल मीडिया एल्गोरिदम को इस तरह से डिजाइन किया गया है कि वे उपयोगकर्ताओं की मौजूदा मान्यताओं के अनुरूप सामग्री को प्राथमिकता दें, जिससे ऐसे माहौल बन सकते हैं जहां गलत सूचना को बढ़ावा मिलता है। ऐसे वातावरण में, उपयोगकर्ताओं द्वारा गलत जानकारी का सामना करने और उसे फैलाने की संभावना अधिक होती है जो उनके विश्व दृष्टिकोण की पुष्टि करती है, जिससे गलत धारणाओं को दूर करना या वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करना कठिन हो जाता है (बेनक्लर एट अल., 2018)।

बॉट्स और फर्जी खातों की भूमिकाः बॉट्स और फर्जी खातों का इस्तेमाल अक्सर गलत सूचनाओं को फैलाने के लिए किया जाता है। ये स्वचालित खाते बड़े पैमाने पर सामग्री पोस्ट या शेयर करके गलत जानकारी को तेजी से फैला सकते हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों का इस प्रकार का हेरफेर एक बढ़ती हुई चिंता का विषय है, क्योंकि यह कुछ राजनीतिक विचारों के लिए व्यापक समर्थन का भ्रम पैदा कर सकता है, भले ही वह समर्थन कृत्रिम रूप से बनाया गया हो (बेनक्लर एट अल., 2018)।

2. **राजनीतिक विमर्श और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं पर प्रभाव**

राजनीतिक संस्थाओं में विश्वास को कमजोर करनाः गलत सूचनाओं के प्रसार से राजनीतिक संस्थाओं और निर्वाचित अधिकारियों पर विश्वास कम हो सकता है। जब मतदाताओं को झूठी या भ्रामक जानकारी मिलती है, तो वे राजनीतिक व्यवस्था से निराश हो सकते हैं, जिससे राजनेताओं के लिए आम सहमति बनाना या कानून पारित करना अधिक कठिन हो जाता है। यह राजनीतिक ध्रुवीकरण में योगदान देता है और प्रभावी शासन में बाधा उत्पन्न कर सकता है (ऑलकॉट और जेंट्जकोव, 2017)।

जनमत को प्रभावित करनाः गलत सूचना प्रमुख राजनीतिक मुद्दों से जुड़े तथ्यों को तोड़–मरोड़ कर पेश करके जनमत को प्रभावित करने की क्षमता रखती है। उदाहरण के लिए, किसी उम्मीदवार के कार्यकाल, नीतिगत प्रस्ताव या चुनाव परिणाम के बारे में झूठे दावे मतदाताओं की धारणाओं को प्रभावित कर सकते हैं और उनके मतदान व्यवहार को बदल सकते हैं। इसलिए, राजनीतिक अभियानों में गलत सूचना का रणनीतिक उपयोग चुनाव परिणामों को प्रभावित कर सकता है (तुफेकसी, 2015)।

डिजिटल युग में फर्जी खबरों से मुकाबला

1. तथ्य–जांच और मीडिया साक्षरता

तथ्य–जांच संगठनों की भूमिकाः गलत सूचनाओं के बढ़ते खतरे के जवाब में, तथ्य–जांच संगठन डिजिटल सूचना पारिस्थितिकी तंत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। ये संगठन दावों को सत्यापित करने और ऑनःलाइन फैलने वाली गलत सूचनाओं का खंडन करने का काम करते हैं। सटीक और समय पर सुधार प्रदान करके, तथ्य–जांचकर्ता फर्जी खबरों के प्रभाव को कम करने में मदद करते हैं (बौलियान, 2015)।

मीडिया साक्षरता अभियानः फर्जी खबरों से निपटने के लिए मीडिया साक्षरता बढ़ाना एक और महत्वपूर्ण रणनीति है। जनता को फर्जी खबरों की पहचान करने, विश्वसनीय स्रोतों को पहचानने और ऑनलाइन मिलने वाली जानकारी के बारे में आलोचनात्मक रूप से सोचने के लिए शिक्षित करना बेहद जरूरी है। मीडिया साक्षरता अभियानों का उद्देश्य व्यक्तियों को समाचारों का अधिक विवेकी उपभोक्ता बनने और गलत सूचनाओं के प्रति कम संवेदनशील होने के लिए सशक्त बनाना है (मैककॉर्किंडेल, 2010)।

2. सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म की जवाबदेही

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
(Peer Review Journal as per UGC 2025 Standard Guidelines)
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 12, Issue: 4 | October – December 2025

प्लेटफॉर्म की जिम्मेदारीः सोशल मीडिया कंपनियों से उनके प्लेटफॉर्म पर गलत सूचनाओं के प्रसार की जिम्मेदारी लेने का आग्रह बढ़ता जा रहा है। फेसबुक, ट्विटर और यूट्यूब जैसी कंपनियों ने गलत सामग्री को चिह्नित करने, उपयोगकर्ताओं को विश्वसनीय स्रोत उपलब्ध कराने और फर्जी खबरों की पहुंच को कम करने के उपाय लागू किए हैं। हालांकि, इन प्रयासों की अपर्याप्तता और फर्जी खबरों के तेजी से फैलने को रोकने में विफलता के कारण आलोचना हुई है (बेनक्लर एट अल., 2018)।

पारदर्शिता और विनियमनः सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों में अधिक पारदर्शिता और विनियमन की मांग बढ़ रही है। दुनिया भर की सरकारें राजनीतिक विज्ञापनों को विनियमित करने, डेटा गोपनीयता पर सख्त नियम लागू करने और यह सुनिश्चित करने के तरीकों की तलाश कर रही हैं कि प्लेटफॉर्म गलत सूचनाओं के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करें। चुनौती विनियमन और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के संरक्षण के बीच संतुलन बनाए रखने की है, क्योंकि अत्यधिक प्रतिबंधात्मक नीतियां वैध राजनीतिक बहस को दबा सकती हैं (ऑलकॉट और जेंट्जकोव, 2017)।

3. **प्रौद्योगिकी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता समाधान**

फर्जी खबरों का पता लगाने के लिए एआई का उपयोग करनाः कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और मशीन लर्निंग प्रौद्योगिकियां फर्जी खबरों की पहचान करने और उन्हें चिह्नित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। एआई का उपयोग गलत सूचनाओं के पैटर्न का विश्लेषण करने और भ्रामक या झूठे होने की संभावना वाले लेखों या पोस्टों का पता लगाने के लिए किया जा सकता है। हालांकि ये प्रौद्योगिकियां अभी भी प्रारंभिक अवस्था में हैं, लेकिन फर्जी खबरों के प्रसार से निपटने के लिए ये एक आशाजनक मार्ग प्रस्तुत करती हैं (तुफेकसी, 2015)।

सोशल मीडिया और राजनीतिक ध्रुवीकरण

सोशल मीडिया, लोकतांत्रिक भागीदारी और संवाद को बढ़ावा देने के साथ–साथ, राजनीतिक ध्रुवीकरण को बढ़ाने का एक प्रमुख कारण भी बन गया है। त्वरित संवाद और व्यापक सूचना प्रसार को सुगम बनाने के उद्देश्य से बनाए गए इन प्लेटफार्मों ने अनजाने में एक ऐसा वातावरण तैयार कर दिया है जहाँ राजनीतिक विभाजन और भी बढ़ जाते हैं। इस खंड में, हम जानेंगे कि सोशल मीडिया किस प्रकार विभाजनकारी राजनीति और प्रतिध्वनि कक्षों तथा फिल्टर बुलबुले के निर्माण में योगदान देता है।

सोशल मीडिया किस प्रकार विभाजनकारी राजनीति में योगदान देता है

1. **अतिवादी राजनीतिक विचारों का प्रवर्धन**

ध्रुवीकरण करने वाली सामग्री और एल्गोरिथम प्रवर्धनः सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ऐसे एल्गोरिदम का उपयोग करते हैं जो अधिक सहभागिता उत्पन्न करने वाली सामग्री को प्राथमिकता देते हैं, जैसे कि भावनात्मक रूप से आवेशित या उत्तेजक पोस्ट। परिणामस्वरूप, चरम राजनीतिक विचार, जो तीव्र प्रतिक्रियाएं उत्पन्न करते हैं, अधिक प्रचारित होने की संभावना रखते हैं (बेनक्लर एट अल., 2018)। इससे ऐसी सामग्री का प्रसार होता है जो उपयोगकर्ताओं को ध्रुवीकृत करती है, और अक्सर उन्हें अधिक चरम वैचारिक स्थितियों की ओर धकेलती है।

सनसनीखेज खबरें और क्लिकबेटः सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों की प्रकृति, जिनमें संक्षिप्त और ध्यान खींचने वाली पोस्टों पर जोर दिया जाता है, ने भी राजनीतिक चर्चा में सनसनीखेजता को बढ़ावा दिया है। सनसनीखेज या भ्रामक शीर्षकों पर आधारित राजनीतिक संदेशों के साझा होने की संभावना अधिक होती है, जिससे मौजूदा राजनीतिक विभाजन और भी गहरा जाता है। क्लिकबेट की यह संस्कृति अक्सर सूक्ष्म नीतिगत चर्चाओं को अति सरलीकृत और ध्रुवीकरण करने वाले संक्षिप्त बयानों में बदल देती है (तुफेकसी, 2015)।

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
(Peer Review Journal as per UGC 2025 Standard Guidelines)
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 12, Issue: 4 | October – December 2025

राजनीतिक विज्ञापन और नकारात्मक प्रचार अभियानः राजनीतिक उम्मीदवार और समर्थक समूह लक्षित राजनीतिक विज्ञापन के लिए सोशल मीडिया का तेजी से उपयोग कर रहे हैं, और अक्सर प्रतिद्वंद्वियों के खिलाफ विरोध खड़ा करने के लिए नकारात्मक प्रचार का सहारा लेते हैं। नकारात्मक विज्ञापन भय, क्रोध और अविश्वास जैसी तीव्र भावनाओं को भड़काने की अधिक संभावना रखते हैं, जो राजनीतिक ध्रुवीकरण को बढ़ावा देते हैं। उदाहरण के लिए, चुनावों के दौरान, उम्मीदवार अपने विरोधियों के बारे में नकारात्मक संदेश फैलाने के लिए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का उपयोग करते हैं, उन्हें अतिरंजित या बढ़ा–चढ़ाकर पेश करते हैं (एडेलमैन, 2017)।

हम बनाम वे वाली मानसिकताः सोशल मीडिया की जानकारी को अत्यधिक व्यक्तिगत तरीके से प्रस्तुत करने की क्षमता एक ऐसा वातावरण बनाती है जहाँ उपयोगकर्ता लगातार ऐसी राजनीतिक सामग्री के संपर्क में आते हैं जो उनके विश्वासों से मेल खाती है। इससे ''हम बनाम वे'' की मानसिकता उत्पन्न हो सकती है, जहाँ व्यक्ति राजनीतिक विरोधियों को अलग–अलग राय रखने वाले लोगों के बजाय शत्रु के रूप में देखते हैं। सोशल मीडिया की विभाजनकारी प्रकृति ने राजनीतिक गुटों के बीच बढ़ती शत्रुता और विरोधी दृष्टिकोणों के प्रति समझ या सहानुभूति की सामान्य कमी में योगदान दिया है (बेनक्लर एट अल., 2018)।

2. प्रतिध्वनि कक्ष प्रभाव और राजनीतिक विमर्श

पूर्व–स्थापित मान्यताओं का सुदृढ़ीकरणः सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का डिजाइन उपयोगकर्ताओं को समान विचारधारा वाले व्यक्तियों का अनुसरण करने, अपने विचारों को प्रतिबिंबित करने वाले राजनीतिक समूहों में शामिल होने और अपनी मौजूदा मान्यताओं के अनुरूप सामग्री से जुड़ने के लिए प्रोत्साहित करता है। इससे पूर्व–स्थापित विचारधाराएँ मजबूत होती हैं और भिन्न मतों के प्रति जागरूकता सीमित हो जाती है। समय के साथ, उपयोगकर्ताओं के लिए अपनी मान्यताओं को चुनौती देने वाले राजनीतिक दृष्टिकोणों का सामना करने की संभावना कम हो जाती है, जिससे दृष्टिकोण संकीर्ण हो सकता है (पैरीसर, 2011)।

राजनीतिक ध्रुवीकरण के एक उपकरण के रूप में सोशल मीडियाः सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पक्षपातपूर्ण चर्चाओं के प्रमुख केंद्र बन गए हैं, जहां लोग अपनी राजनीतिक प्राथमिकताओं को चुनौती देने के बजाय, उनकी पुष्टि करने वाली जानकारी खोजते हैं। यह विशेष रूप से राजनीतिक अभियानों में स्पष्ट होता है, जहां सोशल मीडिया पक्षपातपूर्ण बयानबाजी का युद्धक्षेत्र बन जाता है। राजनीतिक विचारधाराओं का निरंतर सुदृढ़ीकरण मतदाताओं को और अधिक ध्रुवीकृत करता है, जिससे लोग वैचारिक आधार पर तेजी से विभाजित होते जा रहे हैं (चौडविक, 2013)।

3. राजनीतिक गुटबाजी को बढ़ावा देने में सोशल मीडिया की भूमिका

डिजिटल कबीलेवाद और पक्षपातपूर्ण पहचानः सोशल मीडिया ने ''डिजिटल कबीलेवाद'' की भावना को बढ़ावा दिया है, जहाँ व्यक्ति राजनीतिक दलों या वैचारिक समूहों के साथ खुद को दृढ़ता से जोड़ते हैं। यह समूह पहचान ''इन–ग्रुप'' और ''आउट–ग्रुप'' के गठन की ओर ले जाती है, जहाँ इन–ग्रुप के सदस्यों को नेक माना जाता है और विरोधियों को खलनायक के रूप में देखा जाता है। यह कबीलेवाद इस बात में स्पष्ट है कि उपयोगकर्ता राजनीतिक सामग्री के साथ कैसे जुड़ते हैं, अक्सर विरोधी विचारों को सिरे से खारिज कर देते हैं, और डिजिटल प्लेटफार्मों द्वारा प्रदान की गई गुमनामी और दूरी से यह भावना और भी तीव्र हो जाती है (तुफेकसी, 2015)।

पुष्टिकरण पूर्वाग्रह और राजनीतिक प्रतिध्वनि कक्षसोशल मीडिया प्लेटफॉर्म उपयोगकर्ताओं के पूर्वाग्रह को बढ़ावा देते हैं, जिसका अर्थ है कि व्यक्ति ऐसे कंटेंट से जुड़ने की अधिक संभावना रखते हैं जो उनके मौजूदा विचारों का समर्थन करता है। यह पक्षपातपूर्ण पहचान को और मजबूत करता है और राजनीतिक प्रतिध्वनि कक्ष बनाता है, जहां भिन्न विचारों को दबा दिया जाता है, अनदेखा कर दिया जाता है या उनका उपहास

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
(Peer Review Journal as per UGC 2025 Standard Guidelines)
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 12, Issue: 4 | October – December 2025

किया जाता है। सोशल मीडिया पर पूर्वाग्रह आलोचनात्मक सोच और रचनात्मक राजनीतिक चर्चा में भाग लेने की क्षमता को कम करता है, जिससे सामाजिक विभाजन गहराता है (पैरीसर, 2011)।

राजनीतिक चर्चाओं में प्रतिध्वनि कक्ष और फिल्टर बुलबुले

1. इको चौंबर्स और फिल्टर बबल्स को समझना

इको चौंबर्स और समूह ध्रुवीकरणः इको चौंबर एक ऐसा स्थान है जहाँ लोगों को केवल वही जानकारी मिलती है जो उनके मौजूदा विश्वासों को पुष्ट करती है, अक्सर एक बंद, समरूप समूह के भीतर। सोशल मीडिया उच्च सहभागिता उत्पन्न करने वाली सामग्री को बढ़ावा देकर इस प्रभाव को और बढ़ा देता है, जो आमतौर पर उपयोगकर्ताओं की राजनीतिक विचारधाराओं के अनुरूप होती है। समय के साथ, ये इको चौंबर समूह ध्रुवीकरण को जन्म देते हैं, जहाँ समान सामग्री के निरंतर संपर्क में आने के कारण व्यक्तियों के विचार अधिक चरम हो जाते हैं (बेनक्लर एट अल., 2018)।

फिल्टर बबल्स और एल्गोरिथम आधारित क्यूरेशनः फिल्टर बबल्स उस प्रक्रिया को संदर्भित करते हैं जिसके द्वारा एल्गोरिदम चुनिंदा रूप से उपयोगकर्ताओं को ऐसी जानकारी दिखाते हैं जो उनके पहले से मौजूद विचारों की पुष्टि करती है, जिससे वे विपरीत दृष्टिकोणों से प्रभावी रूप से ''अलग–थलग'' हो जाते हैं। जटिल एल्गोरिदम द्वारा संचालित सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, उपयोगकर्ता के पिछले व्यवहारकृपसंद, शेयर, टिप्पणियाँ और खोज इतिहासकृके आधार पर सामग्री फीड को अनुकूलित करते हैं। परिणामस्वरूप, उपयोगकर्ताओं के विविध राजनीतिक दृष्टिकोणों से रूबरू होने की संभावना कम हो जाती है, जिससे विरोधी विचारों के प्रति उनका संपर्क सीमित हो जाता है और राजनीतिक ध्रुवीकरण को बढ़ावा मिलता है (पैरीसर, 2011)।

फिल्टर बबल्स का राजनीतिक सहभागिता पर प्रभावः सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर फिल्टर बबल्स के निर्माण से उपयोगकर्ता उन सामग्री से जुड़ने से हतोत्साहित होते हैं जो उनकी मान्यताओं को चुनौती देती है। विविध दृष्टिकोणों के संपर्क में कमी के कारण सार्वजनिक संवाद अधिक खंडित और कम सहिष्णु हो जाता है, क्योंकि व्यक्ति अपनी राजनीतिक विचारधाराओं में अधिक दृढ़ हो जाते हैं और समझौता या संवाद के लिए कम खुले होते हैं (तुफेकसी, 2015)।

2. प्रतिध्वनि कक्षों के संदर्भ में राजनीतिक ध्रुवीकरण

मौन का दुष्चक्र और राजनीतिक ध्रुवीकरण''मौन का चक्र'' सिद्धांत बताता है कि जिन व्यक्तियों को लगता है कि उनके विचार अल्पसंख्यक हैं, वे सामाजिक अलगाव के डर से उन्हें व्यक्त करने से कतराते हैं। सोशल मीडिया पर, एक जैसी सोच वाले समूह और फिल्टर बबल इस स्थिति को और भी मजबूत करते हैं, जहाँ असहमति वाले विचारों को हाशिए पर धकेल दिया जाता है या अधिक प्रभावशाली आवाजों के आगे दबा दिया जाता है। इससे ध्रुवीकृत स्थितियाँ और भी गहरी हो जाती हैं, जिससे लोगों के लिए राजनीतिक मतभेदों के बावजूद रचनात्मक बहसों में शामिल होना मुश्किल हो जाता है (नोएल–न्यूमैन, 1993)।

राजनीतिक बहुलवाद के लिए चुनौतियाँः सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स के कारण विचारों के सीमित दायरे और संकीर्ण सोच वाले समूह बनने से राजनीतिक चर्चाओं की विविधता गंभीर रूप से सीमित हो जाती है। इसका असर लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं पर पड़ता है, जहां बहस करने, समझौता करने और आम सहमति बनाने की क्षमता कमजोर हो जाती है। राजनीतिक बहुलवाद, जो विविध दृष्टिकोणों पर पनपता है, तब कमजोर हो जाता है जब सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स उपयोगकर्ताओं को वैकल्पिक राजनीतिक विचारों से अवगत होने से रोकते हैं (बेनक्लर एट अल., 2018)।

निष्कर्ष

सोशल मीडिया प्लेटफार्मों ने दुनिया भर में राजनीतिक संचार को नया आकार दिया है, लेकिन इसके साथ

ही गलत सूचना और फर्जी खबरों का प्रसार एक बड़ी चुनौती बन गया है। सोशल मीडिया एल्गोरिदम की संरचना और वायरल सामग्री के कारण गलत जानकारी तेजी से फैलती है, जिससे राजनीतिक विमर्श विकृत हो सकता है और लोकतांत्रिक प्रक्रियाएं प्रभावित हो सकती हैं। हालांकि सोशल मीडिया कंपनियां इस समस्या से निपटने के लिए कदम उठा रही हैं, जैसे कि गलत सूचना को चिह्नित करना और तथ्य–जांच की पहल करना, फिर भी इन प्रयासों की अपर्याप्तता और फर्जी खबरों के प्रसार को नियंत्रित करने में विफलता चिंता का विषय है। इसके अतिरिक्त, मीडिया साक्षरता अभियानों, सार्वजनिक जागरूकता और कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित समाधान जैसे तकनीकी उपायों के माध्यम से फर्जी खबरों को नियंत्रित किया जा सकता है। इस प्रकार, सोशल मीडिया प्लेटफार्मों की अधिक पारदर्शिता और जिम्मेदारी सुनिश्चित करने के लिए वैश्विक स्तर पर सहयोग की आवश्यकता है, ताकि लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को संरक्षित किया जा सके और गलत सूचना के प्रभाव को कम किया जा सके।

संदर्भ

- ✓ स्जोको, एन., द्वारकानाथ, एन., मिलर, ई., चुगानी, सी.डी., और कुलिबा, ए.जे. (2023)। युवा सहभागी क्रिया अनुसंधान कार्यक्रम में किशोरों के बीच मनोवैज्ञानिक सशक्तिकरण और भविष्योन्मुखी अभिविन्यास। जर्नल ऑफ कम्युनिटी साइकोलॉजी, 51(5), 1851–1859।
- ✓ अहमद, एस., और गिल–लोपेज, टी. (2022). सोशल मीडिया पर आकस्मिक समाचार एक्सपोजर और राजनीतिक भागीदारी अंतरालः शिक्षा और सामाजिक नेटवर्क की भूमिका को उजागर करना। टेलीमैटिक्स और सूचना विज्ञान, 68, 101764.
- ✓ ग्रासो, एम., और स्मिथ, के. (2022). यूरोप में युवाओं के बीच राजनीतिक भागीदारी और राजनीतिक जुड़ाव में लैंगिक असमानताएंः क्या युवा महिलाएं युवा पुरुषों की तुलना में कम राजनीतिक रूप से जुड़ी हुई हैं? राजनीति, 42(1), 39–57.
- ✓ याजदानी, एन., होयट, एल.टी., मेकर कास्त्रो, ई., और कोहेन, ए.के. (2022)। प्रारंभिक उभरते वयस्क कॉलेज छात्रों की महामारी से संबंधित नागरिक सहभागिता में सामाजिक–राजनीतिक प्रभाव। उभरती वयस्कता, 10(4), 1041–1047।
- ✓ चू, जेड., बियान, सी., और यांग, जे. (2022). चीन में सार्वजनिक भागीदारी पर्यावरण शासन को कैसे बेहतर बना सकती है? बहु–खिलाड़ी विकासवादी खेल के साथ एक नीति सिमुलेशन दृष्टिकोण। पर्यावरण प्रभाव आकलन समीक्षा, 95, 106782.
- ✓ हलीम, एच., मोहम्मद, बी., दाउदा, एस.ए., अजीजान, एफ.एल., और अकनमु, एम.डी. (2021)। मलेशियाई युवाओं में ऑनलाइन राजनीतिक भागीदारी का सोशल मीडिया उपयोग, कथित सूचना गुणवत्ता, राजनीतिक रुचि और राजनीतिक ज्ञान के साथ संबंधः संरचनात्मक समीकरण मॉडल विश्लेषण। कॉजेंट सोशल साइंसेज, 7(1), 1964–186।
- ✓ पालोमारेस, पीपी, कैडुतडुट, डीई, अमोद, एएफ, और टोमारो, क्यूपीवी (2021)। निर्वाचित युवा नेताओं के बीच राजनीतिक भागीदारी के लिए प्रेरणाओं का निर्धारण। जर्नल स्टडी पेमेरिनताहन, 12(1), 35–61।
- ✓ कोसियारा–पेडरसन, के., वैन हाउटे, ई., और स्कारो, एस.ई. (2025)। सोशल मीडिया पक्षकार बनाम पार्टी सदस्यः डिजिटल युग में राजनीतिक संबद्धता। पश्चिम यूरोपीय राजनीति, 49(2), 435–456।
- ✓ ड्रेस्टन, जे.एच., और नैन्ज, ए. (2025). सोशल मीडिया पर नकली चुनाव सेटिंग में आकस्मिक और जानबूझकर एक्सपोजरः व्यक्तिपरक और वस्तुनिष्ठ राजनीतिक ज्ञान और संरेखित मतदान पर प्रभाव। मानव संचार अनुसंधान, 52(1), 24–37.